

I request the Government of India to tighten the noose around these travel agents and save the youth of our country languishing abroad in dire straits .The mothers of our youth are in lot of pain when they receive painful calls from their children languishing in jails abroad. These hapless parents do not have the means to communicate with their stranded children or to bring them back safely, nor their imprisoned children can come back on their own. Thus, I again request the Government's intervention for action on these travel agents.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by hon. Member, Shri Sant Balbir Singh: Dr. John Brittas (Kerala), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Dr. V. Sivadasan (Kerala) and Dr. Ashok Kumar Mittal (Punjab).

Shri Vivek K. Tankha; Need for rehabilitation of displaced Kashmiri Pandits and facilitation of religious visits to Sharda Peeth through LoC Corridor.

**Need for rehabilitation of displaced Kashmiri Pandits and facilitation of religious visits to Sharda Peeth through LoC Corridor**

**श्री विवेक के. तन्खा** (मध्य प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन साहब, यह तो पुराना दर्द है, जो कि दूर नहीं हो रहा है। पंडितों को तो बहुत सालों से, सदियों से वहां जो ट्रीटमेंट मिला, उसके चलते उन्हें उस जगह को छोड़ना पड़ा। 1990 के बाद तो लगभग करीब-करीब 80-90 परसेंट पंडित फैमिलीज़ वहां से चली गई हैं। लेकिन अब वे सब वहाँ वापस जाना चाहती हैं, वे वहां रहना चाहती हैं, मगर वहां जो व्यवस्थाएं चाहिए, जो सिक्योरिटी, जो रिहैबिलिटेशन, जो रेस्टोरेशन चाहिए, वह क्यों नहीं हो पा रहा है? यह सब चाहते हैं, सब लोग बोलते जरूर हैं, मगर यह नहीं हो पा रहा है। एक ही वक्त लोगों को यह फीलिंग हुई थी कि कुछ हो रहा है, जब मनमोहन सिंह जी ने कश्मीरी पंडितों को वहां पर resettle किया था। That was the only time. ...(*Interruptions*)... आप किसी भी कश्मीरी से पूछ लीजिए। हम लोगों ने फिल्म नहीं बनाई, हम लोगों ने उनके लिए काम किया।

दूसरा, हमारी एक शारदा पीठ है, जो LoC के दूसरी तरफ है। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान से बात करके शारदा पीठ का कॉरिडोर पंडितों के लिए, भक्ति के लिए बनाया जाए। आपने करतारपुर में बनाया है, तो कश्मीरियों के लिए भी वह बनाइए। 75 साल से शारदा पीठ का यह कॉरिडोर बंद है। हम वहां जा नहीं सकते। ये चीजें आदि शंकराचार्य जी के वक्त की हैं। मैं तो चाहता हूं कि थोड़ा सा ध्यान आप कश्मीरी पंडितों पर दीजिए। यह मेरी समस्या नहीं है, यह historical injustice है, जो हो रहा है। मैं आप सबसे और पूरी पार्लियामेंट से निवेदन करता हूं कि that time has come to do justice to Kashmiri Pandits. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by hon. Member, Shri Vivek K. Tankha: Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Shri Pramod Tiwari (Rajasthan), Shrimati Sonia Gandhi (Rajasthan), Shri Ashok Singh (Madhya Pradesh), Shri Imran Pratapgarhi (Maharashtra), Shri Digvijaya Singh (Madhya Pradesh), Shri R. Girirajan (Tamil Nadu), Shri Haris Beeran (Kerala) and Shri Madan Rathore (Rajasthan).

Dr. Ajeet Madhavrao Gopchade; Concern over rising problem of drug addiction among poor children.

### Concern over rising problem of drug addiction among poor children

**डा. अजित माधवराव गोपछड़े (महाराष्ट्र) :** उपसभापति महोदय, मैं पेशे से एमबीबीएस, एमडी, बाल रोग चिकित्सक हूँ। आज एक अत्यंत गंभीर विषय पर चर्चा करने के लिए आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। यह विषय हमारे समाज के सबसे कमजोर वर्ग, अर्थात् गरीब बच्चों से संबंधित है, जो नशे की समस्या का शिकार हो रहे हैं।

महोदय, सड़कों पर रहने वाले गरीब बच्चे झंड़ू बाम को बेड पर लगाकर सेवन कर रहे हैं। साथ ही, वे Fevicol, paint, petrol, diesel, turpentine, nail polish remover, Corex, Fenistil, cough syrup जैसी वस्तुओं का भी उपयोग नशे के लिए कर रहे हैं। ये सभी चीजें आसानी से उपलब्ध हैं और इनकी बिक्री या सेवन पर कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं है, इसलिए पुलिस इस स्थिति में कुछ नहीं कर सकती है। आजकल कई लोग नशे के पारंपरिक तरीकों से हटकर पेट्रोल-डीजल की गंध सूंघने की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यह एक अनोखा नशा है, जो तेजी से फैल रहा है। पेट्रोल सूंघने की आदत एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जो स्वास्थ्य को कई प्रकार से नुकसान पहुंचा सकता है। Fevicol और paint जैसे पदार्थों का सेवन करने वाले बच्चों की संख्या हर साल लाखों तक पहुंच रही है। अब किशोरों के बीच में synthetic drugs एक status symbol बनता जा रहा है। कई किशोर अपने दोस्तों के बीच लोकप्रियता पाने के लिए या सामाजिक दबाव के कारण इन पदार्थों का सेवन करने लगे हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, इस समस्या के समाधान के लिए समाज की ओर से एक सामूहिक प्रयास करना बहुत आवश्यक है। सरकार द्वारा सभी बाल मनोचिकित्सकों को इस अभियान में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना बहुत जरूरी है। मादक पदार्थों के सेवन से प्रभावित बच्चों के मामले में, इन बच्चों को बाल कल्याण समिति के सामने लाना बहुत जरूरी है। इसके बाद बाल कल्याण समिति उन बच्चों के देखभाल, विषहरण, इलाज और पुनर्वास के लिए सही जगहों में भेजने का फैसला करेगी।

महोदय, औषधि एवं प्रसाधन सामग्री नियम, 1945 के तहत इसका उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक पंजीकृत फार्मासिस्ट केवल उन्हीं दवाओं का वितरण करेगा, जो पंजीकृत चिकित्सा पेशेवरों द्वारा निर्धारित की गई हों। हम सभी जानते हैं कि यह नशा केवल एक व्यक्तिगत समस्या